tattva bodha

तत्व बोध

With Hindi & English Translations

Published by the International Vedanta Mission

Tattvabodha

of Shri Adi Shankaracharya

(with meaning in hindi and English)

Index

1.	अधिकारी	2–3
2.	आत्मतत्त्व विवेक	4–8
3.	जगत की उत्पत्ति	9–11
4.	जीव–ब्रह्म ऐक्य	12–13
5.	जीवन्मुक्त	14–15

Published by

International Vedanta Mission

http//www.vmission.org/ I vmission@gmail.com

ओम् श्री गुरुभ्यो नमः

अथ श्री शंकराचार्य विरचित

तत्त्वबोधः

मंगलाचरण

वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम् ।
मुमुक्षूणां हितार्थाय तत्त्वबोधोऽभिधीयते ।।

हम ज्ञानप्रदाता वासुदेवेन्द्र योगियों में श्रेष्ठ गुरु को नमस्कार करके मुमुक्षुओं के हित के लिए तत्त्वबोध बता रहे हैं।

Having saluted Sri Vasudeva,the King of Yogis, the Guru who is the bestower of Jnana (the knowledge) of the Truth, the 'Tattva Bodha' (the knowledge of the Truth) is expounded for the benefit of the seekers after liberation.

1. अधिकारी

1. साधनचतुष्टयसम्पन्नाधिकारिणां मोक्षसाधनभूतं तत्त्वविवेक प्रकारं वक्ष्यामः।

साधन चतुष्ट्य सम्पत्ति से युक्त अधिकारी के लिए मोक्ष के साधनरूप तत्त्वविवेक का प्रकार बताने जा रहे हैं।

We will explain for those who are endowed with the fourfold qualification (Sadhana Chatushtaya) the mode of discrimination, which is the means of liberation.

2. साधनचतुष्टयं किम्?

चार साधन कौन से है?

What are the four-fold qualifications?

2.1 नित्यानित्यवस्तुविवेकः। इहामुत्रार्थफलभोगविरागः। शमादि षट्कसम्पत्तिः मुमुक्षुत्वं चेति।

नित्य–अनित्य वस्तुविवेक, इस और परलोक के भोग से वैराग्य, शमादि छह सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व है।

The capacity to discriminate between the permanent and the impermanent. Dispassion to the enjoyment of the fruits of one's actions here and hereafter. The group of six accomplishments beginning with Sama. The yearning for liberation.

3.1 नित्यानित्यवस्तुविवेकः कः?

नित्यानित्य वस्तुविवेक किसे कहते है?

What is meant by the discrimination between the Eternal and the ephemeral?

3.2 नित्यवस्त्वेकं ब्रह्म तद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यम्। अयमेव नित्यानित्यवस्तुविवेकः।

नित्य वस्तु एक ब्रह्म है, उससे भिन्न सब अनित्य है। यह ही नित्यानित्य वस्तुविवेक है।

Brahman alone is the one Nitya Vastu, the Eternal Factor. Everything else is Anitya i.e. impermanent. This conviction is the discrimination between the Eternal and the Ephemeral.

4.1 विरागः कः?

विराग किसे कहते हैं ?

What is dispassion ?

4.2 इहस्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यम्।

इस लोक और स्वर्गलोक के भोग के प्रति इच्छा के अभाव को विराग कहते है।

The absence of desire for the enjoyment (of the fruits of one's actions) in this world, as also in the other world.

5.1 शमादिसाधनसम्पत्तिः का?

शमादि छह सम्पत्ति क्या है?

What are the accomplishments of Sadhana starting with Sama?

5.2 शमो दम उपरमस्तितिक्षा श्रद्धा समाधानं चेति।

शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

They are: Sama, Dama, Uparama, Titiksha, Sraddha and Samadhana.

5.3 शमः कः? मनोनिग्रहः।

शम किसे कहते है? मन का निग्रह।

What is Sama? Control or mastery over the mind.

5.4 दमः कः? चक्षुरादिबाह्येन्द्रियनिग्रहः।

दम किसे कहते है? चक्षु आदि बाहरी इन्द्रियों का निग्रह।

What is Dama? Control or mastery over external sense organs.

5.5 उपरमः कः? स्वधर्मानुष्ठानमेव।

उपरम किसे कहते है? स्वधर्म के अनुष्ठान को ही उपरम कहते है।

What is Uparama? Strict observance of one's own duty.

5.6 तितिक्षा का? शीतोष्णसुखदुःखादिसहिष्णुत्वम्।

तितिक्षा क्या है? शीत–उष्ण, सुख–दुःख आदि के प्रति सहनशीलता।

What is Titiksha? The endurance of heat and cold, pleasure and pain etc.

5.7 श्रद्धा कीदृशी? गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा।

श्रद्धा कैसी होती है? गुरु और वेदान्त वाक्यों में विश्वास ही श्रद्धा है।

What is the nature of Sraddha? Faith in the words of the Guru, and in the Scriptures is Sraddha.

6.1 समाधानं किम्? चित्तैकाग्रता।

समाधान किसे कहते है? चित्त की एकाग्रता।

What is Samadhana? Single-pointedness of the mind.

6.2 मुमुक्षुत्वं किम्? 'मोक्षो मे भूयाद्' इति इच्छा।

मुमुक्षुत्व किसे कहते है? हमें मोक्ष की प्राप्ति हो यह इच्छा।

What is Mumukshutvam? "Let me attain Moksha" (Liberation). This intense yearning is Mumukshutvam.

7 एतत्साधनचतुष्टयम्। ततस्तत्त्वविवेकाधिकारिणो भवन्ति।

यह ही चार साधन है। इससे युक्त होने पर ही तत्त्व के विवेक का अधिकारी होता है।

These are the four-fold qualifications. Thereafter (i.e. after having acquired these four-fold qualifications) they become Adhikaris i.e. persons fit for the enquiry into the Truth.

2. आत्मतत्त्वविवेक

8.1 **तत्त्वविवेकः कः?**

तत्त्वविवेक किसे कहते है?

What is Tattva Viveka?

8.2 **आत्मा सत्यस्तदन्यत् सर्वं मिथ्येति।**

आत्मा सत्य है, उससे भिन्न सर्व मिथ्या है।

"Atman alone is real. All things other than are uneral" This firm conviction is called Tattva Viveka.

9.1 **आत्मा कः?**

आत्मा किसे कहते है?

What (who) is Atman?

9.2 **स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराद्व्यतिरिक्तः पंचकोशातीतः सन् अवस्थात्रयसाक्षी सच्चिदानन्दस्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स आत्मा।**

स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से जो पृथक् है, जो तीनों अवस्थाओं का साक्षी है, तथा जो सच्चिदानन्दस्वरूप है, वह आत्मा है।

That which is other than the Sthula, Sukshma and Karana Sarira's (gross, subtle and causal bodies) which is beyond the five sheaths, which is the witness of the three states of awareness which is the nature of Sat-Chit-Ananda (Existence-knowledge-Bliss) is Atma.

10.1 **स्थूलशरीरं किम्?**

स्थूलशरीर क्या है?

What is Sthula Sarira (the gross body)?

10.2 **पंचीकृतपंचमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोगायतनं शरीरं, अस्ति जायते वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यतीति षड्विकारवदेतत्स्थूलशरीरम्।**

जो पंचीकृत पांच महाभूतों से बना हुआ, पुण्यकर्म से प्राप्त, सुख–दुःखादि भोगों को भोगने का स्थान है, तथा जिसमें अस्तित्व, जन्म, वृद्धि, परिणाम, क्षय तथा विनाश रूपा षड्विकार होते है, वह स्थूलशरीर है।

That which is composed of the five Mahabhutas (elements) after they have undergone the process of Panchidarana; born as a result of good actions of the past; the tenement to earn the experiences of sukha,dukha and the like, and subject to the six modifications namely 'is, born, grows, changes, decays and dies' is the gross body.

11.1 **सूक्ष्मशरीरं किम्?**

सूक्ष्मशरीर क्या है?

What is the Sukshma Sarira (the subtle body)?

11.2 **अपंचीकृतपंचमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोग साधनं पंचज्ञानेन्द्रियाणि पंचकर्मेन्द्रियाणि पंच प्राणादयः मनश्चैकं बुद्धिश्चैका एवं सप्तदशकलाभिः सह यस्तिष्ठति तत्सूक्ष्मशरीरम्।।**

जो अपंचीकृत (सूक्ष्म) पांच महाभूतों से बना हुआ, सत्कर्म से प्राप्त, सुख–दुःखादि भोग का साधन है, जो पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच प्राणादि, मन और बुद्धि एवं सत्रह कलाओं से युक्त है, वह सूक्ष्मशरीर है।

That which is composed of five Mahabhutas (elements) prior to their undergoing the

process of Panchikarana, born of good actions of the past the instruments for experiences of pleasure, pain etc. constituted of the seventeen items namely: the five Jnanendriyas, (sense organs) the five karmendriyas, (the organs of action) the five Prans (Prana, Apana, Udana, Samana and Vyana) the mind and the intellect is the Subtle body.

11.3 श्रोत्रं त्वक् चक्षुः रसना घ्राणमिति पंच ज्ञानेन्द्रियाणि।।

श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना और घ्राण यह पांच ज्ञानेन्द्रियां है।

Ear, skin (sense of touch), eyes, tongue (sense of taste) and nose (smell), these are the five Jnanendriyas— organs of perception.

11.4 श्रोत्रस्य दिग्देवता। त्वचो वायुः। चक्षुषः सूर्यः। रसनायाः वरुणः। घ्राणस्य अश्विनौ इति ज्ञानेन्द्रियदेवताः।।

श्रोत्र के देवता दिशां, त्वचा के वायु, चक्षु के सूर्य, रसना के वरुण और घ्राण के अश्विनीकुमार देवता हैं। इस प्रकार से सब के देवता हैं।

The presiding deity of the ear is Space, of the skin (touch) is the Air, of the eyes is the Sun, of the tongue(taste) is the Varuna (The principle of water), of the smell (nose) is the Aswini Kumars(twins).

Thus (the aforesaid) are the presiding deities of the organs of perception.

11.5 श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम्। त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम्। चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्। रसनाया विषयः रसग्रहणम्। घ्राणस्य विषयः गन्धग्रहणम् इति।

श्रोत्र का विषय शब्द को ग्रहण करना है, त्वचा का विषय स्पर्शग्रहण, चक्षु का विषय रूपग्रहण, रसना का विषय रसग्रहण और घ्राण का विषय गन्धग्रहण है।

The field of experience for the ear is the reception of sound, for the skin is the cognition of touch, for the eyes is the perception of forms, for the tongue is the cognition of taste And for the Nose is the cognition of smell.

11.6 वाक्पाणिपादपायूपस्थानीति पंचकर्मेन्द्रियाणि।

वाणी, हस्त, पाद, पायू और उपस्थ ये पांच कर्मेन्द्रियां है।

Speech, hands, legs, anus and the genitals are the five Karmendriyas—the organs of action.

11.7 वाचो देवता वह्निः। हस्तयोरिन्द्रः। पादयोर्विष्णुः। पायोर्मृत्युः। उपस्थस्य प्रजापतिरिति कर्मेन्द्रियदेवताः।

वाणी के देवता अग्नि है, हस्त के इन्द्र, पाद के विष्णु, पायू के मृत्यु तथा उपस्थ के प्रजापति है। एवं ये कर्मेन्द्रियों के देवता है।

The presiding deity of the speech is Fire, of the hands is Indra, of the feet isVishnu, of the anus is Mrityu, of the genitals is Prajapati. Thus the presiding deities for the organs of action.

11.8 वाचो विषयः भाषणम्। पाण्योर्विषयः वस्तुग्रहणम्। पादयोर्विषयः गमनम्। पायोर्विषयः मलत्यागः। उपस्थस्य विषय आनन्दः इति।

वाणी का विषय बोलना है, हाथ का वस्तुग्रहण करना, पाद का गमन करना, पायू का मलत्याग तथा उपस्थ का विषय आनन्द है।

The function of the organ of the speech is to speak, of the hands is to grasp the things, of the legs is locomotion,-of the anus(excretory organ) is the elimination of the waste products, of the genital organs is pleasure(procreation).

12.1 **कारणशरीरं किम्?**

कारणशरीर किसे कहते हैं?

What is the Causal body?

12.2 **अनिर्वाच्यानाद्यविद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारणमात्रं सत् स्वरूपाज्ञानं निर्विकल्पकरूपं यदस्ति तत्कारणशरीरम्।**

जो अनिर्वचनीय, अनादि, अविद्यारूप है, तथा शरीरद्वय का कारण है, जो सत्स्वरूपता के अज्ञानरूपता एवं निर्विकल्परूप है, वह कारणशरीर है।

That which is inexplicable, beginningless and in the form of Avidya (ignorance of the Reality), the cause for the other two bodies (the subtle and the gross), ignorant of one's own real nature (Self), free from duality or division, is the Karana sarira or the Causal body.

13.1 **अवस्थात्रयं किम्?**

तीन अवस्थाएं कौनसी है?

What are the three states of experience?

13.2 **जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थाः।**

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था।

They are: the waking, the dream and the deep-sleep states.

13.3 **जाग्रदवस्था का?**

जाग्रत अवस्था किसे कहते हैं?

What is the waking state?

13.4 **श्रोत्रादिज्ञानेन्द्रियाणि शब्दादिविषयैश्च ज्ञायते इति यत्सा जाग्रदवस्था।**

श्रोत्र आदि ज्ञानेन्द्रियां तथा शब्दादि विषयों के द्वारा जो जानी जाती है, वह जाग्रत अवस्था है।

The state of experience in which the sense objects (sound etc) are perceived through the sense organs (ear etc) is the waking state.

13.5 **स्थूलशरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते।**

स्थूलशरीर अभिमानी आत्मा को विश्व कहा जाता है।

The Self identifying itself with the gross body called 'Viswa'

13.6 **स्वप्नावस्था केति चेत्? जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं तज्जनितवासनया निद्रासमये यः प्रपंचः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था।**

स्वप्न अवस्था किसे कहते हैं, ऐसा पूछने पर बताते हैं कि सोते समय जाग्रत अवस्था में जो देखा तथा सुना है, उससे जनित वासना के द्वारा निर्मित जो प्रपंच प्रतीत होता है, उसे स्वप्न अवस्था कहते हैं।

For the question, what is Svapnavastha (the Dream state) the explanation is; the world that is projected while in sleep from the impressions born of what has been seen or heard in the waking state is called Dream.

13.7 **सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा तैजसः इति उच्यते।**

सूक्ष्मशरीर का अभिमानी आत्मा तैजस कहा जाता है।

The Self identifying itself with the subtle body is called 'Taijasa'.

13.8 **अतः सुषुप्त्यवस्था का?**

सुषुप्ति अवस्था किसे कहते हैं?

Then, what is the deep-sleep state?

13.9 अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयत इति सुषुप्त्यवस्था।

हमें कुछ नहीं पता है, हमने सुखपूर्वक निद्रा का अनुभव किया, यह सुषुप्ति अवस्था है।

That state about which one says later "I did not know anything: I have well enjoyed a good sleep" is the deep sleep state.

13.10 कारणशरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते।

कारणशरीर अभिमानी आत्मा प्राज्ञ कहलाती है।

The Self, identifying itself with the causal body (in the deep sleep state) is called 'Prajna'.

14.1 पंचकोशाः के? अन्नमयः प्राणमयः मनोमयः विज्ञानमयः आनन्दमयश्चेति।

पंचकोश कौन कौन से हैं? अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय।

What are the five Sheths? The Food Sheath, the Vital Air sheath, the Mental sheath, the Intellectual sheath, and the Bliss sheath are the five sheaths.

14.2 अन्नमयः कः? अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य अन्नरूपपृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः स्थूलशरीरम्।

अन्नमय किसे कहते हैं? अन्नरस से बना हुआ, अन्नरस से ही वृद्धि को प्राप्त हुआ, अन्नरूप पृथ्वी में जो विलीन होता है, वह अन्नमय कोश, स्थूलशरीर है।

What is the food sheath? That which is born of food, which grows by food, and goes back to earth which is of the nature of food, is called the Food Sheath, this is the gross body.

14.3 प्राणमयः कः? प्राणाद्याः पंचवायवः वागादीन्द्रियपंचकं प्राणमयः कोशः।

प्राणमय किसे कहते हैं? प्राण आदि पांच वायु, वाणी आदि पांचकर्मेन्द्रियों का समूह प्राणमय कोश है।

What is the Vital Air Sheath? The five physiological functions such as Prana etc.(Prana, Apana, Vyana, Udana and Samana) together with the five organs of action namely speech etc., form the Pranamaya Kosa the Vital Air Sheath.

14.4 मनोमयः कोशः कः? मनश्च ज्ञानेन्द्रियपंचकं मिलित्वा भवति स मनोमयः कोशः।

मनोमय कोश क्या है? मन और पांच ज्ञानेन्द्रियों का समूह मिलकर जो बनता है, वह मनोमय कोश है।

What is the mental Sheath? The mind and the five organs of perception together form the Mental Sheath.

14.5 विज्ञानमयः कः? बुद्धिश्च ज्ञानेन्द्रियपंचकं मिलित्वा भवति स विज्ञानमयः कोशः।

विज्ञानमय क्या है? बुद्धि और पांच ज्ञानेन्द्रियां मिलकर जो बनता है, वो विज्ञानमय कोश है।

What is the intellectual Sheath?

The intellect, along with the five organs of perception, together form the intellectual Sheath.

14.6 आनन्दमयः कः? एवमेव कारणशरीरभूताविद्यास्थ मलिनसत्त्वं प्रियादिवृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः।

आनन्दमय किसे कहते हैं? इस प्रकार से कारणशरीरभूत, अविद्या में स्थित, प्रियादि वृत्ति सहित मलिनसत्व आनन्दमय कोश है।

What is the Bliss Sheath? Established in Avidya, which is of the form of the Causal body, of impure nature united with the Vrittis (modifications) like Priya, Moda and Pramoda.

14.7 एतत्कोशपंचकम्।

यह पांच कोश है।

These are the five Sheaths.

15 **मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनश्च मदीया बुद्धिर्मदीयं ज्ञानमिति स्वेनैव ज्ञायते तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं कटककुण्डलगृहादिकं स्वस्माद्भिन्नं तथा पंचकोशादिकं मदीयत्वेन ज्ञातमात्मा न भवति।**

जैसे मेरे कंगन, कुण्डल, गृह आदि अपने से भिन्नरूप से जाने जाते हैं, ठीक उसी तरह मेरा शरीर, मेरे प्राण, मेरा मन और मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान इस प्रकार से जाने जाते हैं। अतः ये पांचकोश आदि 'मेरे' की तरह ज्ञात होने की वजह से आत्मा नहीं हैं।

Just as bangles, ear-rings, houses etc., known as"mine" are all other than the knower - so too, the five sheaths known by the Self as "my body. pranas, my mind. my intellect and my knowledge" (should all be other than the knower, and so cannot be the Atman.)

16.1 **आत्मा तर्हि कः? सच्चिदानन्द स्वरूपः।**

तो फिर आत्मा क्या है? जो सच्चिदानन्द स्वरूप है।

Then, what is the Atman? It is of the nature of Sat-Chit-Ananda (Existence-Knowledge - Bliss).

16.2 **सत्किम्? कालत्रयेऽपि तिष्ठतीति सत्।**

सत् किसे कहते हैं? जो तीनों कालों में रहता है।

What is Sat? Sat is that which remains unchanged in the three periods of time.

16.3 **चित्किम्? ज्ञानस्वरूपः।**

चित् क्या है? जो ज्ञानस्वरूप है।

What is Chit? It is of the nature of absolute knowledge.

16.4 **आनन्दः कः? सुखस्वरूपः।**

आनन्द क्या है? जो सुखस्वरूप है।

What is Ananda? Of the nature of absolute happiness.

3. जगत की उत्पत्ति

17 **अथ चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः।**

अब चौबीस तत्व की उत्पत्ति का तरीका बताते हैं।

Now, we shall explain the evolution of the twenty-four Tattvas.

18 **ब्रह्माश्रया सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका माया अस्ति।**

ब्रह्म के आश्रित सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण रूप माया है।

Depending on Brahman for its existence is MAYA, which is of the nature of the three gunas: Satva, Rajas and Tamas.

19 **ततः आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोस्तेजः। तेजस आपः। अद्भ्यः पृथिवी।**

उसमें से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथिवी उत्पन्न हुए।

From that (Maya), Akasa is born. From Akasa, Vayu (the Air). From Air, the Fire. From Fire, Water. From Water, the Earth.

20 **एतेषां पंचतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य सात्त्विकांशात् श्रोत्रेन्द्रियं सम्भूतम्।**

इन पंचमहाभूत में से आकाश के सात्विक अंश से श्रोत्रेन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From among these five great elements, out of the Satvic aspect of Akasa, is evolved the ear, the organs of 'hearing'.

20.1 **वायोः सात्त्विकांशात्त्वगिन्द्रियं सम्भूतम्।**

वायु के सात्विक अंश से त्वचा इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Satvic aspect of Vayu (air), is evolved the Skin, the organ of touch.

20.2 **अग्नेः सात्त्विकांशाच्चक्षुरिन्द्रियं सम्भूतम्।**

अग्नि के सात्विक अंश से चक्षु इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Satvic aspect of Fire, is formed the Eye.

20.3 **जलस्य सात्त्विकांशाद्रसनेन्द्रियं सम्भूतम्।**

जल के सात्विक अंश से रसना इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Sattvic aspect of Water, is formed the tongue, the organ of taste.

20.4 **पृथिव्यां सात्त्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं सम्भूतम्।**

पृथ्वी के सात्विक अंश से घ्राण इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Sattvic aspect of Earth, is formed the organ of smell.

21.1 **एतेषां पंचतत्त्वानां समष्टिसात्त्विकांशान्मनो बुद्ध्यहंकारचित्तान्तःकरणानि सम्भूतानि।**

इन पांचो तत्वों के सात्विक अंश से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूप अन्तःकरण उत्पन्न होता है।

From the total sattvik content of these five elements Antahkarana (the inner instru ments) constituted of Manas, Buddhi, Ahamkara, and Chitta are formed.

21.2 **संकल्पविकल्पात्मकं मनः।**

मन संकल्पविकल्पात्मक होता है।

Manas is of the nature of indecision or doubt.

21.3 **निश्चयात्मिका बुद्धिः।**

बुद्धि निश्चयात्मिका होती है।

Intellect is of the nature of decision.

21.4 अहंकर्ता अहंकारः।

अहंकर्ता अहंकार होता है।

" I am the doer"- this sense is the ego, Ahamkara.

21.5 चिन्तनकर्तृ चित्तम्।

चिन्तनकर्ता चित्त होता है।

The thinking faculty (or the faculty of recollections) is the Chitta.

21.6 मनसो देवता चन्द्रमाः। बुद्धेर्ब्रह्मा। अहंकारस्य रुद्रः। चित्तस्य वासुदेवः।

मन के देवता चन्द्रमा हैं, बुद्धि के ब्रह्माजी, अहंकार के रुद्र और चित्त के वासुदेव हैं।

The presiding deity of the mind is the Moon. For the intellect (the presiding deity is) Brahma. For the ego, it is Rudra. For the Chitta (the presiding deity is)Vasudeva.

22.1 एतेषां पंचतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य राजसांशात् त्वगिन्द्रियं सम्भूतम्।

इन पांचो तत्वों में से आकाश के रजोगुण के अंश से वाक् इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

Among these five elements, from the Rajas aspect of space, is formed the organ of speech.

22.2 वायोः राजसांशात् पाणीन्द्रियं सम्भूतम्।

वायु के रजोगुण के हस्तेन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Rajas aspect of Air, is formed the hand.

22.3 वह्नेः राजसांशात् पादेन्द्रियं सम्भूतम्।

अग्नि के रजोगुण के अंश से पादेन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Rajas aspect of Fire, is formed the leg.

22.4 जलस्य राजसांशादुपस्थेन्द्रियं सम्भूतम्।

जल के रजोगुण के अंश से उपस्थ इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Rajas aspect of water, the Anus is formed.

22.5 पृथिव्या राजसांशात् गुदेन्द्रियं सम्भूतम्।

पृथ्वी के रजोगुण के अंश से गुदा इन्द्रिय उत्पन्न हुई।

From the Rajas aspect of the earth, the Genitals are formed.

23 एतेषां समष्टि राजसांशात्पंचप्राणाः सम्भूताः।

इन समष्टि के रजोगुण के अंश से पांच प्राण उत्पन्न हुए।

From the total Rajas aspect of all these five elements, the five vital airs are born.

24.1 पंचीकरणं कथम् इति चेत्?

पंचीकरण कैसे होता है?

If it is asked how this Pachikarana (grossification) takes place, it is as follows:

24.2 एतेषां पंचमहाभूतानां तामसांशस्वरूपम् एकमेकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकमर्धं पृथक् व्यवस्थाप्यापरमपरमर्धं चतुर्धा विभज्य स्वार्धमन्येषु अर्धेषु स्वभागचतुष्टयसंयोजनं कार्यम्। तदा पंचीकरणं भवति।

इन पांचों महाभूतो के तमोगुण का अंश दो भाग में विभाजित होकर आधे को छोड़कर बाकी के अर्धभाग के चार भागों में विभाजन होता है, और प्रत्येक का चौथा हिस्सा आधे में मिल जाता है। इस प्रकार पंचीकरण होता है।

The Tamas aspect of each of the five elements divide into two equal parts. One half of each remains intact. The other half of each gets divided into four equal parts. Then, to the intact half of one element, one one-eighth portion from each of the other four

elements gets joined. Then Panchikarana (the process by which the subtle elements become the gross elements) is complete.

25 **एतेभ्यः पंचीकृतपंचमहाभूतेभ्यः स्थूलशरीरं भवति।**

इन पंचीकृत पंचमहाभूतों के द्वारा स्थूलशरीर बनता है।

Form these five grossified elements the gross body is formed.

4. जीव–ब्रह्म का ऐक्य

26 **एवं पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यं सम्भूतम्।**

इस तरह पिण्ड और ब्रह्माण्ड का ऐक्य सिद्ध होता है।

Thus there is the identity between the Pindanda and the Brahmanda i.e. the Microcosm and the Macrocosm.

27 **स्थूलशरीराभिमानि जीवनामकं ब्रह्मप्रतिबिम्बं भवति, स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मात् ईश्वरं भिन्नत्वेन जानाति।**

स्थूलशरीर अभिमानी जीव नामक ब्रह्म का प्रतिबिम्ब होता है। वह ही जीव स्वभाव से ही ईश्वर को अपने से भिन्न जानता है।

The reflection (as it were) of Brahman (in Sukshma Sarira) whoich identifies itself with the gross body is called Jiva. This Jiva by nature (ignorance) takes Iswara to be different from himself.

28 **अविद्या उपाधिः सन् आत्मा जीवः इति उच्यते।**

अविद्या उपाधि से युक्त आत्मा को जीव कहते है।

The consciousness (Atma) conditioned (Upadhi) by Avidya is called Jiva.

29 **मायोपाधिः सन् ईश्वरः इत्युच्यते।**

माया उपाधि से युक्त आत्मा को ईश्वर कहते है।

The awareness conditioned by Maya is called Isvara.

30 **एवमुपाधिभेदाज्जीवेश्वरभेददृष्टिर्यावत्पर्यन्तं तिष्ठति तावत्पर्यन्तं जन्ममरणादिरूपसंसारो न निवर्तते।**

इस प्रकार उपाधिभेद से जीव–ईश्वर में भेद दृष्टि जब तक रहती है, तब तक जन्म–मरणादि रूप संसार की निवृत्ति नही होती।

So long as the notion which is due to difference in the conditionings that Jiva and Isvara are different, remains, until such time, there is no redemption from 'Samsara' which is of the form of repeated birth, death etc.

31 **तस्मात्कारणात् जीवेश्वरयोर्भेदबुद्धिः न स्वीकार्याः।**

इसलिए जीव–ईश्वर में भेदबुद्धि को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

Due to that reason, the notion that 'Jiva is different from Isvara should not be accepted.

32 **ननु साहंकारस्य किंचिज्ज्ञस्य जीवस्य निरहंकारस्य सर्वज्ञस्य ईश्वरस्य तत्त्वमसीति महावाक्यात्कथमभेदबुद्धि स्यादुभयोः। विरुद्धधर्माक्रान्तत्वात् इति चेत्।**

पूर्वपक्ष– विरुद्ध धर्मवाले होने की वजह से अहंकार से युक्त अल्पज्ञ जीव का निरहंकार, सर्वज्ञ ईश्वर के साथ तत्त्वमसि महावाक्य से कैसे अभेदबुद्धि सम्भव हो सकती है?

Doubt:- But the Jiva is endowed with ego and his knowledge is limited. (Where as) Isvara, is without ego and is omniscient.(then) how can there be identity, as stated in the Mahavakya TAT TWAM ASI (That Thou Art), between these two who are possessed of contradictory characteristics?

33 **न, स्थूलसूक्ष्मशरीराभिमानी त्वम्पदवाच्यार्थः। उपाधिविनिर्मुक्तं समाधिदशासम्पन्नं शुद्धं चैतन्यं त्वम्पद लक्ष्यार्थः।**

सिद्वान्तीः– ऐसा नहीं है! स्थूल, सूक्ष्म शरीर अभिमानी त्वंपद का वाच्यार्थ है। इन उपाधियों से मुक्त समाधिदशा

को प्राप्त शुद्ध चैतन्य त्वं पद का लक्ष्यार्थ है।

No (it is not so). The literal meaning of the word ‘Thou’ is the one who identifies himself with gross and subtle bodies (i.e. Jiva). The implied meaning of the word ‘Thou’ is pure awareness which is free from all conditionings and which is appreciated in the state of ‘Samadhi’

34 एवं सर्वज्ञत्वादिविशिष्ट ईश्वरः तत्पदवाच्यार्थः। उपाधिशून्यं शुद्धचैतन्यं तत्पदलक्ष्यार्थः।

इसी तरह सर्वज्ञत्व आदि विशेषता से युक्त ईश्वर तत् पद का वाच्यार्थ है। उपाधि से रहित शुद्धचैतन्य तत्पद का लक्ष्यार्थ है।

So also the literal meaning of the word ‘That’ is the Isvara having omniscience etc. The implied meaning of the word ‘That’ is the pure awareness free of all conditionings.

34.1 एवं च जीवेश्वरयोः चैतन्यरूपेणाऽभेदे बाधकाभावः।

और इस तरह जीव और ईश्वर का चैतन्यरूप से अभेद में बाधक का अभाव है।

Thus there is no contradiction regarding the identity between Jiva and Isvara from the stand point of awarenss.

35 एवं च वेदान्तवाक्यैः सद्गुरूपदेशेन च सर्वेष्वपि भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्ना ते जीवन्मुक्ता इत्यर्थः।

इस तरह वेदान्तवाक्य के द्वारा सद्गुरु के उपदेश से सर्व भूतों में जिसकी ब्रह्मबुद्धि उत्पन्न है, वो ही जीवन्मुक्त है।

Thus by the words (teachings) of Vedanta imparted by a content teacher (Sadguru), those in whom the knowledge of Brahman in all beings is born, they are the Jivanmuktas (liberated even while living).

5. जीवन्मुक्तः

36 ननु जीवन्मुक्तः कः?

जीवन्मुक्त किसे कहते है?

Then, who (exactly) is Jivanmukta?

36.1 यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं शूद्रोऽहमस्मीति दृढ़निश्चयः तथा नाहं ब्राह्मणः न शूद्रः न पुरुषः किन्तु असंगः सच्चिदानन्द स्वरूपः प्रकाशरूपः सर्वान्तर्यामी चिदाकाशरूपोऽस्मीति दृढ़निश्चयरूपः अपरोक्षज्ञानवान् जीवन्मुक्तः।

जिस तरह हम देह हैं, हम पुरुष हैं, हम ब्राह्मण हैं, हम शूद्र हैं इस प्रकार का दृढ़ निश्चय होता है, वैसा ही दृढ़ निश्चय हम ब्राह्मण नहीं हैं, शूद्र नहीं हैं, पुरुष नहीं हैं, किन्तु हम असंग, सच्चिदानन्दस्वरूप, प्रकाशरूप, सर्वान्तर्यामी चिदाकाशरूप हैं, इस प्रकार के दृढ़ निश्चयरूप अपरोक्ष ज्ञान से युक्त होता है, वह जीवन्मुक्त है।

Just as one has the firm belief that 'I am the body', 'I am a man', 'I am a Brahmin', 'I am a Sudra'. So also 'I am not a Brahmin', 'I am not a Sudra', 'I am not a man' but 'I am unattached of the nature Satchidananda effulgent, the indweller of all, the formless awareness' thus one having this firmly ascertained Aparoksha Jnana (Immediate knowl edge) is the Jivanmuktha

36.2 ब्रह्मैवाहमस्मीत्यपरोक्षज्ञानेन निखिलकर्मबन्ध विनिर्मुक्तः स्यात्।

हम ब्रह्म हैं, इस प्रकार के अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा समस्त कर्म के बन्धनों से मुक्त हुआ जाता है।

By the immediate knowledge (Aparoksha Jnana) that 'I am Brahman' one becomes free bondage of all the Karmas.

37.1 कर्माणि कतिविधानि सन्तीति चेत् आगामिसंचित प्रारब्धभेदेन त्रिविधानि सन्ति।

कर्म कितने प्रकार के होते है? आगामी, संचित और प्रारब्ध रूप तीन प्रकार के कर्म होते है।

If it is asked: How many kinds of Karma are there? (The reply is) there are three kinds of karma namely:Agami, Sanchita and Prarabdha.

37.2 ज्ञानोत्पत्त्यनन्तरं ज्ञानिदेहकृतं पुण्यपापरूपं कर्म यदस्ति तदागामीत्यभिधीयते।

ज्ञान की उत्पत्ति के पश्चात् ज्ञानी के शरीर के द्वारा जो पाप–पुण्यरूप कर्म होते है, वे आगामी कर्म के नाम से जाने जाते है।

The results of actions good or bad performed through the body of the Jnani after the dawn of knowledge is known as Agami.

37.3 संचित कर्म किम्?

संचित कर्म किसे कहते है?

What is Sanchita Karma?

37.4 अनन्तकोटिजन्मनां बीजभूतं सत् यत्कर्मजातं पूर्वार्जितं तिष्ठति तत्संचितं ज्ञेयम्।

अनन्त कोटि जन्म में पूर्व में अर्जित किये हुए कर्म के जो बीजरूप से स्थित है, उसें संचित कर्म जानें।

The results of actions performed in (all) the previous births which are in the seed form to give rise to endless crores of births (in future) is called Sanchita (accumulated) Karma.

37.5 प्रारब्धं कर्म किमिति चेत्।

प्रारब्ध कर्म किसे कहते है?

If it is questioned, "What is Prarabha Karma"?

37.6 इदं शरीरमुत्पाद्य इह लोके एवं सुखदुःखादिप्रदं यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगेन नष्टं भवति

प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षयं इति।

जो इस शरीर को उत्पन्न करके, इस लोक में सुखदुःखादि देने वाले कर्म है, जिसका भोग करने से ही नष्ट होते है। प्रारब्ध कर्म का क्षय भोग से ही होता है।

Having given birth to this body, the actions which give results in this very world , in the form of hapiness of misery, and which can be destroyed only by enjoying or suffering them, is called Prarabdha Karma.

38 **संचित कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चयात्मकज्ञानेन नश्यति।**

संचित कर्म 'हम ही ब्रह्म है,' इस प्रकार के निश्चयात्मक ज्ञान से नष्ट होते है।

The Sanchita Karma is destroyed by the Knowledge ' I am Brahman',

38.1 **आगामि कर्म अपि ज्ञानेन नश्यति किंच आगामिकर्मणां नलिनीदलगतजलवत् ज्ञानिनां सम्बन्धो नास्ति।**

आगामी कर्म भी ज्ञान से नष्ट होते है। तथा आगामी कर्म के साथ कमल के फूल की पंखूडी पर के जल के समान ज्ञानी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

The Aagami Karma is also destroyed by Jnana—and the Jnani is not affected by it just as a lotus leaf is not effected by the water on it.

38.2 **किंच ये ज्ञानिनं स्तुवन्ति भजन्ति अर्चयन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतं आगामि पुण्यं गच्छति। ये ज्ञानिनं निन्दन्ति द्विषन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतं सर्वमागामि क्रियमाणं यदवाच्यं कर्म पापात्मकं तद्गच्छति।**

इसके अलावा जो ज्ञानवान की स्तुति करता है, सेवा करता है, अर्चना करता है, उनके प्रति ज्ञानवान के द्वारा किये हुए आगामी कर्म के पुण्य जाते है। जो ज्ञानी की निन्दा करता है, द्वेष करता है, उसके प्रति ज्ञानी के द्वारा हुए उन समस्त आगामी–क्रियमाण कर्म का फल जाता है, जो पापरूप अवाच्य होते है।

Further those who praise, worship and adore the Jnani, to them go the results of the good actions done by the Jnani. Those who absuse,hate or cause pain or sorrow to a Jnani to them go the results of the sinful actions done by the Jnani.

38.3 **तथा च आत्मवित्संसारं तीर्त्वा ब्रह्मानन्दमिहैव प्राप्नोति। 'तरति शोकम् आत्मवित्' इति श्रुतेः।।**

इस प्रकार आत्मज्ञानी संसार से परे जाकर ब्रह्मानन्द को यहां पर ही प्राप्त करता है। 'आत्मवित् शोक को पार कर जाता है' यह श्रुति प्रमाण भी है।

Thus the knower of the Self, having crossed the Samsara,attains the Supreme Bliss here itself.The Sruti affirms: 'The knower of the self goes beyond all sorrows'.

38.4 **''तनुं त्यजतु वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथवा।**
ज्ञानसम्प्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः।।'' इति स्मृतेश्च।

''ज्ञान प्राप्त होने के उपरान्त अपने शरीर को काशी में त्यागे अथवा चाण्डाल के घर में त्यागें तो भी वह मुक्ति को ही प्राप्त है, उसमें कोई संशय नहीं है।'' यह स्मृति भी है।

Let the Jnani cast his body in Kasi (a sacred place) or in the house of a dog cater (Chandala), (it is immaterial because) at the time of gaining the knowledge (itself) he is liberated being freed from all results of actions. So assert the Smruti's too.

।। ओम् तत्सत् ।।

....

International Vedanta Mission
www.vmission.org.in / vmission@gmail.com

शास्त्री – तृतीयवर्षम् (षष्ठसत्रार्द्धः) पञ्चमपत्रम्

मा. संहिताया नवमाध्यायः महीधरभाष्यसहितः, ध्वज-दण्ड-रथ-घन-विकृतिपाठानां सलक्षणं सोदाहरणं लेखनम्

1. नवमाध्याये कति कण्डिकाः सन्ति ?
   चत्वारिंशत् (40) कण्डिकाः सन्ति।
2. नवमाध्याये किं वर्ण्यते ?
   नवमाध्यायस्य 34 कण्डिकापर्यन्तं वाजपेययागः ततः राजसूययागः च वर्ण्यते।
3. नवमाध्यायस्य प्रथमः मन्त्रः कः ?
   देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव.... स्वदतु स्वाहा॥ इति।
4. केतपूशब्दस्य कोऽर्थः ?
   केतशब्देन अन्नमुच्यते। केतमन्नं पुनातीति केतपूः आदित्यः।
5. अप्स्वन्तरमृतमस्तु इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः देवता च का ?
   अश्वानां प्रोक्षणे विनियोगः अश्वदेवत्यः च मन्त्रः।
6. वाता वा मनो वा इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः ?
   रथस्य दक्षिणभागे अश्वयोजने विनियोगः।
7. वातरंहा भव इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः ?
   रथस्य उत्तरभागे अश्वयोजने विनियोगः।
8. जवो यस्ते इति इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः ?
   रथे तृतीयाश्वस्य योजने विनियोगः।
9. देवस्याहं सवितुः प्रसवे इति मन्त्रेण किं क्रियते ?
   वाजपेये अनेन मन्त्रेण ब्रह्मा रथचक्रक्रस्योपरि आरोहणं क्रियते।
10. बृहस्पते वाजं जय इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः ?
    दुन्दुभिवादने विनियोगः।
11. यजमानस्य रथारोहमन्त्रः कः ?
    देवस्याहं सवितुः सवे.... गच्छत। इति।
12. दधिका इति शब्दस्य कोऽर्थः ?
    दधिः सन् क्रमते अध्वानमिति दधिक्राः अश्वः।
13. ते नो अर्वन्तो इति मन्त्रस्य ऋषिच्छन्दोदेवताः लिखत।
    जगती छन्दः, अश्वदेवता, ऋषिः नाभानेदिष्टः।
14. वाजशब्दस्य कोऽर्थः ?
    अन्नमित्यर्थः।
15. वाजपेययागः कति दिनात्मकः ?
    एकविंशतिदिनसाध्यः एकाहः वाजपेयः क्रतुः।
16. वाजपेयशब्दस्य कोऽर्थः ?
    वाजः अन्नं पेयद्रव्यात्मकं यस्मिन् स वाजपेयः।

17. आप्रीसंज्ञकहोमस्य का देवता ?
संवत्सराभिमानी प्रजापतिः ।
18. आप्रीहोमः कतिसंख्याकाः ?
द्वादशसंख्याकाः ।
19. क्लृप्तिहोमाः कति भवन्ति ?
आयुर्यज्ञेन कल्पतामित्यारभ्य षट् क्लृप्तीः भवन्ति ।
20. अग्निरेकाक्षरेण इत्यादिमन्त्राणां किं नाम ?
अग्निरेकाक्षरेणेति मन्त्राः उज्जितिसंज्ञकाः ।
21. राजसूययागः केनानुष्ठेयः ?
अभिषिक्तेन राज्यधुरं वहता क्षत्रियेण अनुष्ठेयः ।
22. कति दिनसाध्यः राजसूयक्रतुः ?
किञ्चिदधिकैकवत्सरसाध्यः अयं क्रतुः ।
23. अग्ने सहस्व पृतना इति मन्त्रस्य कुत्र विनियोगः ?
अपामार्गहोमार्थम् उल्मुकादाने विनियोगः ।
24. अपामार्गहोमे किं द्रव्यं का च देवता ?
अपामार्गतण्डुलद्रव्यम् अग्निश्च देवता ।
25. दुष्टरः इति शब्देन कस्य स्तुतिः ?
अग्नेः स्तुतिः । दुस्तरः केनापि तर्तुमशक्यः दुर्निवारः इत्यर्थः ।
26. देवसूहवींषि कति सन्ति ?
अष्टौ देवसूहवींषि सन्ति ?
27. सोमसंस्थानां नामानि लिखत ।
अग्निष्टोमः अत्यग्निष्टोमः उक्थ्यः षोडशी अतिरात्रः अप्तोर्यामः वाजपेयश्चेति सप्त संस्था ।
28. प्रकृतिभूतः सोमयागः कः ?
अग्निष्टोम एव प्रकृतियागः ।
29. सोमयागे कति ऋत्विजां गणाः भवन्ति ?
चत्वारः गणाः । एकस्मिन् गणे चत्वारः इति षोडश ऋत्विजः भवन्ति ।
30. वेदाङ्गानि कति भवन्ति ? कानि च तानि ?
शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरुक्तम्, छन्दः, ज्योतिषं चेति षडङ्गानि भवन्ति ।
31. वेदाङ्गानि केन केन अङ्गेन उपमीयन्ते ?
शिक्षा-घ्राणं, कल्पः-हस्तौ, व्याकरणं-मुखम्, निरुक्तं-श्रोत्रम्, छन्दः-पादौ, ज्योतिषं-नेत्रम् ।
32. चतुर्णां वेदानामुपवेदाः के के सन्ति ?
ऋग्वेदः-आयुर्वेदः, यजुर्वेदः-धनुर्वेदः, सामवेदः-गान्धर्ववेदः, अथर्ववेदः-शिल्पवेद/पिशाचवेद/सर्पवेदः
33. विकृतिपाठाः कति सन्ति, के च ते ?
अष्टौ विकृतिपाठाः सन्ति । यथा –
जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः । अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः ॥

34. ध्वजविकृतिपाठस्य लक्षणं किम् ?

ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुचारयेदिति ।
वर्गे वा ऋचि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः ॥ इति ।

35. दण्डविकृतिपाठस्य लक्षणं किम् ?

क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्च क्रममुत्तरम् ।
अर्धर्चादेवमुक्त्वोक्तः क्रमदण्डोऽभिधीयते ॥ इति ।

36. रथविकृतिपाठस्य लक्षणं किम् ?

पादशोऽर्धशो वापि सहोक्त्वा दण्डवद्रथः ।
ऋचोर्धर्चयोः पदयोर्दण्डवत्ससंहितापदक्रमैः ॥ इति ।

37. घनविकृतिपाठस्य लक्षणं किम् ?

अन्तक्रमं पठेत् पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत् ।
आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः ॥ इति ।

5. ध्वजः[28]

मंत्रादितोऽन्तपर्यन्तमन्ततश्चादिपर्यन्तं यदा क्रमपाठः क्रियते। तदा ध्वजपाठो भवति। अयं पाठः एकस्याः ऋचः वर्गस्य वा भवति। यथा-

(आदितः पाठः)	(अन्ततः पाठः)
१ ओषधयः सं	२ पारयामसीति पारयामसि
३ सं वदन्ते	४ राजन् पारयामसि
५ वदन्ते सोमेन	६ तं राजन्
७ सोमेन सह	८ ब्राह्मणस्तं
९ सह राज्ञा	१० कृणोति ब्राह्मणः
११ राज्ञेति राज्ञा	१२ यस्मै कृणोति
१३ यस्मै कृणोति	१४ राज्ञेति राज्ञा
१५ कृणोति ब्राह्मणः	१६ सह राज्ञा
१७ ब्राह्मणस्तं	१८ सोमेन सह
१९ तं राजन्	२० वदन्ते सोमेन
२१ राजन् पारयामसि	२२ सं वदन्ते
२३ पारयामसीति पारयामसि	२४ ओषधयः सं

---

28. ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेद्यदि।
वर्गे वा ऋषि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः।।

6. दण्डः[29]

आदौ मन्त्रादितः पदद्वयं गृहीत्वा क्रमपाठं कृत्वा तस्य विलोमपाठं कुर्यात्। पुनस्तयोरेव पदयोः क्रमपाठावसरेऽग्रिमं पदमेकं संयोज्य पाठं कुर्यात्। पुनः विलोमपाठं कुर्यात्। अनेनैवप्रकारेणैकैकं पदं गृहीत्वा पुनः समेषां क्रमपाठ-मनुलोमविलोमाभ्यां कुर्वन् मन्त्रार्धपर्यन्तमानयेत्। एतेन दण्डपाठो भवति। यथा-(मन्त्रपूर्वार्धस्य)

२ = ओषधयः सं।। समोषधयः।।

३ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सं ओषधयः।

४ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन वदन्ते समोषधः।

५ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह सोमेन वदन्ते समोषधः।

६ = ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञा सह सोमेन वदन्ते समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा।

उत्तरार्धस्य -

२ = यस्मै कृणोति। कृणोति यस्मै।

३ = यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

---

29. क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्चक्रममुत्तमम्।
अर्धर्चादेवमुक्तोऽयंक्रमदण्डोऽभिधीयते।।

Scanned with CamScanner

४ = यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

५ = यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

६ = यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि।। पारयामसीति पारयामसि।

7. रथः[30]

एकस्य पदोऽर्धर्चो वा पदद्वयं यत्र दण्डपाठविधिनोच्चार्यते स रथ उच्यते। रथस्त्रिविधः। द्विचक्रत्रिचक्रश्चतुश्चक्रभेदात्। तत्र द्विचक्ररथः पच्छोऽर्धर्चशः पठ्यते। यथा (अर्धर्चशः)

(1) द्विचक्रो रथः (अर्धर्चशः)

(पूर्वार्धः) (उत्तरार्धः)

(१) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (प्रथम एकपात्क्रमः)

समोषधयः। कृणोति यस्मै। (व्युत्क्रमः)

(२) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (द्वितीयो द्विपात्क्रमः)

(ख) सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः। (द्वितीयो द्विपात्क्रमः)

वदन्ते समोषधयः। ब्राह्मणः कृणोति यस्मै। (व्युत्क्रमः)

(३) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

30. पादशोऽर्धर्चशोवापि सहोक्त्यादण्डवद्रथः।
आदिक्रमनयेदन्तं घनमाहुर्मनीर्षिणः।।

(ख) सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)

सोमेन वदन्ते समोषधयः। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

(व्युत्क्रमः)

(४) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(ख) सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

(घ) सोमेन सह। तं राजन्। (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)

सह सोमेन वदन्ते समोषधयः। राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै॥

(व्युत्क्रमः)

(५) (क) ओषधयः सं। यस्मै कृणोति। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ख) सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ग) वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(घ) सोमेन सह। तं राजन्। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

(ङ) सह राज्ञा। राजन् पारयामसि। (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)

राज्ञेति राज्ञा। पारयामसीति पारयामसि। (समाप्तिः)

मन्त्रद्वयं सहोक्त्यापि द्विचक्ररथो भवति। अस्मिन्पक्षेऽपि द्विविधः पाठभेदः। प्रथमस्तावदाद्यमन्त्रस्य (पदद्वयं गृहीत्वा क्रमेण पादान्तं यावत्) दण्डपाठविधिना पठित्वा ततो द्वितीयमन्त्रस्यापि तेनैव प्रकारेण पाठं कुर्यात् यथा–

(१) अग्निमीळे। अयं देवायं।

ईळेऽग्निं। देवायायं।

(२) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। अयं देवाय। देवाय जन्मने।

पुरोहितमीळेऽग्निं। जन्मने देवायायं।

(३) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। स्तोमो जन्मने देवायायं।

(४) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः।।

देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं।। विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं।।

(५) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देव। देवमृत्विजं।।

अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया।

ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायाय।।

(६) अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। देवमृत्विजं।।

अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया। ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया।।

(७) होतारं रत्नधातमम्। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि।।

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातममिति रत्नऽधातम। रत्नधातम इति रत्नऽधातमः।।

द्वितीयप्रकारस्तु पर्यायेण पठ्यते। प्रथम मन्त्रस्य क्रमपाठं विधाय द्वितीस्यापि क्रमपाठं कुर्यात्। अथ विलोमपाठमपि प्रथमस्यादौ विधाय ततो द्वितीयस्य कुर्यात्। यथा–

		(ऋ. १/१/१)	(ऋ. १/२०/१)
(१)	(१)	अग्निमीळे।	अयं देवाय।।
	(२)	ईळेऽग्निं।	देवायायं।।
(२)	(१)	अग्निमीळे।	अयं देवाय।।
	(२)	ईळे पुरोहितं।	देवाय जन्मने।।
		पुरोहितमीळेऽग्निं।	जन्मने देवायायम्।।
(३)	(१)	अग्निमीळे।	अयं देवाय।।
	(२)	ईळे पुरोहितं।	देवाय जन्मने।।
	(३)	पुरोहितं यज्ञस्य।	जन्मने स्तोमः।
		यज्ञस्यं पुरोहितमीळेऽग्निं।	स्तोमो जन्मने देवायायं।
(४)	(१)	अग्निमीळे।	अयं देवाय।।
	(२)	ईळे पुरोहितं।	देवाय जन्मने।।
	(३)	पुरोहितं यज्ञस्यं।	जन्मने स्तोमः।
			'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।
	(४)	यज्ञस्य देवं।	स्तोमो विप्रेभिः।

Scanned with CamScanner

देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं॥

विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

(५) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय॥

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥

(३) पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः।

'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।

(४) यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः।

(५) देवमृत्विजं। विप्रेभिरासया॥

ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं।

आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

(६) (१) अग्निमीळे। अयं देवाय॥

(२) ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥

(३) पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः।

'पुरोहितमिति पुरःऽहितं'।

(४) यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः॥

(५) देवमृत्विजं। विप्रेभिरासया॥

(६) ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया॥

(७) (१) होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥

रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि॥

Scanned with CamScanner

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः।।

रत्नधातममिति रत्नऽधातमं।

रत्नधातम इति रत्नऽधातमः।।

त्रिचक्ररथः

यस्य मन्त्रस्य त्रिषु पादेषु समानपदानि भवन्ति तादृशस्य मन्त्रस्यैव त्रिचक्ररथपाठः सम्भवति। पूर्वं प्रतिपादादितः पदद्वयं गृहीत्वा समेषां क्रमपाठं कृत्वा ततस्तेषां विलोमपाठमपि कुर्यात्। पुनस्त्रयाणां पादानामादितः पदद्वयं गृहीत्वैव क्रमपाठं कृत्वा तत्पश्चात् संक्रमपाठं कुर्यात्। अथ क्रमशः विलोमपाठं कुर्यात्। तद्यथा–

प्रथमपादः द्वितीयपादः तृतीयपादः

(१) (१) विष्णोः कर्माणि। यतो व्रतानि। इन्द्रस्य युज्यः। (प्रथमः क्रमः)

कर्माणि विष्णोः। व्रतानि यतः। युज्य इन्द्रस्य। (व्युत्क्रमः)

(२) (१) विष्णोः कर्माणि। यतो व्रतानि। इन्द्रस्य युज्यः। (द्वितीयः क्रमः)

(२) कर्माणि पश्यत। व्रतानि पस्पशे। युज्यः सखा। (द्वितीयः क्रमः)

पश्यत कर्माणि विष्णोः। पस्पशे व्रतानि यतः। सखा युज्य इन्द्रस्य। (व्युत्क्रमः)

(प्रथमपादः) विष्णोः कर्माणि। कर्माणि पश्यत। पश्यतेति पश्यत। (समाप्तिः)

(द्वितीयपादः) यतो व्रतानि। व्रतानि पस्पशे। पस्पश इति पस्पशे। (समाप्तिः)

(तृतीयपादः) इन्द्रस्य युज्यः। युज्यः सखा। सखेति सखा। (समाप्तिः)

चतुश्चक्ररथः

अयं पाठश्चतुर्षु पादेषु समानपदयुक्तस्य मन्त्रस्यैव भवति। त्रिचक्ररथपाठस्य यो विधिरुक्त स एवात्राप्यनुगृह्यते। यथा–

Scanned with CamScanner

प्रथमपादः द्वितीयपादः तृतीयपादः चतुर्थपादः

(१) (१) ओषधयः सं। सोमेन सह। यस्मै कृणोति। तं राजन्।। (प्रथमक्रमः)

समोषधयः। सह सोमेन। कृणोति यस्मै। राजंस्तं। (व्युत्क्रमः)

(२) (१) ओषधयः सं। सोमेन सह। यस्मै कृणोति। तं राजन्।। (द्वितीयक्रमः)

(२) सं वदते। सह राज्ञा। कृणोति ब्राह्मणः। राजन्पारयामसि। (द्वितीयक्रमः)

वदते समोषधयः। राज्ञा सह सोमेन। ब्राह्मणः कृणोति यस्मै। पारयामसि राजंस्तं। (व्युत्क्रमः)

(प्रथमपादः) ओषधयः सं। सं वदते। वदत इति वदन्ते। (समाप्तिः)

(द्वितीयपादः) सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा।। (समाप्तिः)

(तृतीयपादः) यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मण इति ब्राह्मणः।। (समाप्तिः)

(चतुर्थपादः) तं राजन्। राजन्पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि। (समाप्तिः)

8. घनः[31]

घनो द्विविधः। घनः, घनवल्लभश्चेति। तत्र घनवल्लभोऽपि द्विविधः। तत्राद्यस्तावत् घनः क्रमपाठरीत्या मन्त्रान्तादादिपर्यन्तमानयेत्। आदितश्च तथैवक्रमेणान्तं नयेदेवायमेकः घनपाठः। यथा–

(1) पूर्वार्धस्य (अन्तादादिपर्यन्तम्)

(१) राज्ञेति राज्ञा। सह राज्ञा। सोमेन सह। वदन्ते सोमेन। स वंदन्ते। ओषधयः सं– (आदितोऽन्तपर्यन्तम्).

सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा।

31. अन्तात्क्रमं नयेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्।
आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः।।

Scanned with CamScanner

(उत्तरार्धस्य (अन्तादादिपर्यन्तम्)

(२) पारयामसीति पारयामसि। राजन् पारयामसि। तं राजन्। ब्राह्मणस्तं। कृणोति ब्राह्मणः। यस्मै कृणोति- (आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि।

द्वितीयघनस्तु[32] शिखां पठित्वा तस्य विलोमं कृत्वा तत्रोक्तानि पदानि पुनः पठेत्। यथा-

(१)

शिखापाठः तस्य विपर्यासः तत्पदानां पुनःपाठः

ओषधयः सं समोषधय ओषधयः सं वदन्ते वदन्ते समोषधय ओषधयः सं वदन्ते।।

सं वदन्ते वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन।।

वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह सह सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह

सोमेन सह सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा राज्ञा सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा।

सह राज्ञा राज्ञा सह सह राज्ञा।। राज्ञेति राज्ञा।।

(२)

यस्मै कृणोति कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणः।।

32. शिखामुक्त्वा विपर्ययस्य तत्पदानिपुनः पठेत्।
अयं घन इति प्रोक्तः इत्यष्टौ विकृतीः पठेत्।।

कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं।।

ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् राजंस्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन्।।

तं राजन् राजंस्तं तं राजन् पारयामसि पारयामसि राजंस्तं तं राजन् पारयामसि।।

राजन् पारयामसि पारयामसि राजन् राजन् पारयामसि।। पारयामसीति पारयामसि।।

घनबल्लभोऽपि द्विविधः। क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः प्रथमः। स एव यदा अन्तादादिपर्यन्तमादितश्चान्तपर्यन्तं तदा द्वितीयघनवल्लभ इत्युच्यते।

पञ्चसन्धिलक्षणम्

अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्क्रमोऽभिक्रमस्तथा।
संक्रमश्चेति पञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः।।

क्रमः = 1+2. 2+3। उत्क्रमः = 2+2, 3+3। व्युत्क्रमः =2+1, 3+2।
अभिक्रमः = 1+1, 2+2। संक्रमः 1+2, 2+3।

क्रमः	उत्क्रमः	व्युत्क्रमः	अभिक्रमः	संक्रमः
१-२	२-२	२-१	१-१	१-२

ओषधयः सं। सं सं। समोषधयः। ओषधय ओषधयः। ओषधयः सं।
१ २ २ २ २ १ १ १ १ २

सं वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सं। सं सं। सं वदन्ते।
२ ३ ३ ३ ३ २ . २ २ २ ३

Scanned with CamScanner

वदन्ते सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सोमेन।

३ ४ ४ ४ ४ ३ ३ ३ ३ ४

सोमेन सह। सह सह। सह सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन सह।

४ ५ ५ ५ ५ ४ ४ ४ ४ ५

सह राज्ञा। राज्ञा राज्ञा। राज्ञा सह। सह सह। सह राज्ञा।

५ ६ ६ ६ ६ ५ ५ ५ ५ ६

राज्ञेति राज्ञा।

६ ६

'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि'[33] इत्यस्य पञ्चसन्धिः

तत्सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुस्तत्। तत्तत्। तत्सवितुः।

सवितुर्वरेण्यं। वरेण्यं वरेण्यं। वरेण्यं सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुर्वरेण्यं।

वरेण्यं भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो वरेण्यं। वरेण्यं वरेण्यं। वरेण्यं भर्गः।

भर्गो देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो देवस्य।

देवस्य धीमहि। धीमहि धीमहि। धीमहि देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य धीमहि।

धीमहीति धीमहि।

अत्र क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमाणां साम्प्रदायिकस्वरूपं व्युत्पाद्यते। तत्र क्रमोनाम पदपाठपठितानां शब्दानामादानविसर्गाभ्यां क्रमणम्। यथा-परा[34] मे। मे यन्ति। इत्यादि। उत्क्रमः - क्रमपाठस्योत्तरमेवपदं यत्र

---

33. ऋ. अ. 3/4/10 मं. 3/62/10

34. परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु।
इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।। ऋ. वें. सं. 125/16

Scanned with CamScanner

द्विरभ्यस्यते तदुत्क्रमः। यथा-परामे (इति क्रमः) मे परा इति-व्युत्पक्रमः।

अभिक्रमः

क्रमस्थपूर्वपदस्याभिमुख्येन द्विरभ्यसनमभिक्रमः। यथा-परा मे (इतिक्रमः) तत्पूर्वस्थपदं परा तस्य द्विरभ्यासः-'परा परा' इत्यभिक्रमः।

सङ्क्रमः

अभिक्रमपाठस्थपदेनसहोत्तरपदपठनं सङ्क्रमः। यथा-परा परा' इत्यभिक्रमः। परेति पदोत्तरवर्तमानं मे पदेन सह 'परा मे' इति रूपेण पठनं संक्रमः।[35]

क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः सम्वलितः पञ्चसन्धीत्यपरनामको घनपाठः सम्प्रदायविद्भिः प्रवर्तितः। सोऽयं पञ्सन्धियुक्तोघनपाठः[36] शाब्दिक-लोपागमवर्णविकारव्यापत्तिप्रकृतिभावादिसन्धिनियमैरसम्बद्धः पठ्यते। सन्धिसामान्यनियमैरेवसुबद्धः वैदिकसम्प्रदायप्रवर्तितक्रमोत्क्रव्युत्क्रमाभिक्रम-संक्रमाख्यपञ्चसन्धानसमयवद्धत्वादेवास्य पञ्चसन्धि-युक्तपाठस्तयोरेव जटादण्डाभ्यां पाठेन घनपाठः सिद्ध्यति। यथा-

(१) परा मे। मे मे। मे परा। परा परा। परा मे। परा मे, मे परा,

---

35. यद्यपि क्रमसंक्रमयोरुत्क्रमाभिक्रमयोश्च न कश्चन विशिष्टो भोदः सारुप्यात् तथापि सम्प्रदायकृद्भिर्यत्पृथक् लक्षणोपादानं पाठसिद्ध्यर्थम्। अनेन पञ्चसन्ध्याख्य लक्षणविशिष्टेन वेदपाठेन पदानामनुलोम विलोमपाठेऽपि पौर्वापर्य निश्चीयते। एतेन वेदाक्षराणां रक्षासुदृढा जायते। यदि कश्चित् कुत्रचिद्वेदमन्त्रेषु कमपि शब्दं प्रक्षिपति तर्हि तादृश प्रक्षिप्तशब्दस्य निष्कासनमासां विकृतिपाठेन तथैव भवति यथा तितउना पिष्टेभ्योऽपद्रव्यम्।
इमे पञ्चसन्धयोऽत्र वर्णिताः सन्ति। एतैः साकं घनपाठोऽपि भवति। जटापाठोऽपि।

36. अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्पक्रमोऽभिक्रमस्तथा।
सङ्क्रमश्चेतिपञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः।।

Scanned with CamScanner

परां मे।

(२) मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति। मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति।।

(३) यन्ति धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयः।। यन्ति धीतयो, धीतयो यन्ति, यन्ति धीतयः।।

(४) धीतयो गावः। गावो गावः। गावो धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो गावः।। धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावः।।

(५) गावो न। न न। न गावः। गावो गावः। गावो न।। गावो न, न गावो, गावो न।।

(६) न गव्यूतीः। गव्यूतीर्गव्यूतीः। गव्यूतीर्न। न न। न गव्यूतीः।। न गव्यूतीर्गव्यूतीर्न न गव्यूतीः।।

(७) गव्यूतीरनु। अन्वनु। अनु गव्यूतीः। गव्यूतीर्गव्यूतीः। गव्यूतीरनु।।

गव्यूतीरन्वनु। गव्यूतीर्गव्यूतीरनु।। अन्वित्यनु।।

(८) इच्छन्तीरुरुचक्षसं। उरुचक्षसमुरुचक्षसं। उरुचक्षसमिच्छतीः। इच्छन्तीरिच्छतीः। इच्छन्तीरुरुचक्षसं।।

इच्छन्तीरुरुचक्षसमुरुचक्षसमिच्छन्तीरिच्छन्तीरुरुचक्षसं। उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं।।

पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः

(घनवल्लभः)

पदद्वयस्य क्रमोत्क्रमव्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धिपाठो भवति। अनुलोमविलोमानुलोमैर्जटापाठो जायते। जटया सहोत्तरपदपाठेन शिखापाठो भवति। क्रममुत्तया, विपर्यस्य, पुनश्च क्रमपाठे कृते ध्वजो भवति।

जटादण्डाभ्यां घनपाठः सिद्ध्यति। सर्वमेवैतत्पञ्चसंधियुते घनपाठे घनवल्लभे समुच्चयेन संगच्छते। पञ्चसंधियुतेन अन्तादादिपर्वतमादेरन्तपर्यन्तं च पाठेन द्वितीयो घनवल्लभः सिध्यति।

परां मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूंतीरनुं। इच्छन्तींरुरुचक्षसम्।।[37]

(१) परां मे। मे मे। मे परां। परा परां। परां मे। परां मे, मे परा, परां मे। यन्ति मे, परा, परांमेयन्ति।

(२) मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति। मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति।। धीतयों, धीतयों यन्ति मे, मे यन्ति धीतयंः।।

(३) यन्ति धीतयंः। धीतयों धीतयंः। धीतयों यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयंः।।

यन्ति धीतयों, धीतयों यन्ति, यन्ति धीतयों।।

गावो, गावों धीतयों यन्ति, यन्ति धीतयो गावंः।।

(४) धीतयो गावंः। गावो गावंः। गावों धीतयंः। धीतयों धीतयंः। धीतयो गावंः।।

धीतयो गावो, गावों धीतयो, धीतयो गावो न, न गावों धीतयो, धीतयो गावो न।।

(५) गावो न। न न। न गावंः। गावो गावंः। गावो न।। गावो न, न गावो, गावो न, गव्यूंतीर्गव्यूंतीर्नगावो, गावो न गव्यूंतीः।।

(६) न गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्न। न न। न गव्यूंतीः।। न गव्यूंतीर्गव्यूतीर्न न गव्यूंतीरऽन्व, ऽन्वऽनुगव्यूंतीर्न, न गव्यूंतीरनुं।।

(७) गव्यूंतीरनुं। अन्वनुं। अनु गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीरनु।।

---

37. ऋ. 1/5/16

गव्यूतीरन्वऽनु। गव्यूतीर्गव्यूतीरनु।। अन्वित्यनु।।

(८) इच्छन्तीरुरुचक्षसं। ऊरुचक्षसमुरुचक्षसं। उरुचक्षसमिच्छन्तीः। इच्छन्तीरिच्छन्तीः। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।।

इच्छन्तीरुरुचक्षसमुरुचक्षसमिच्छन्तीरिच्छन्तीरुरुचक्षसम्।

उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसम्।।

एवं सम्पूर्णमन्त्रस्य घनपाठं कृत्वा ततो यदा मन्त्रान्तात्पञ्च-सन्धियुक्तघनपाठं विधाय पुनरादेस्तेनैव प्रकारेणान्तपर्यन्तमानयेत्तदा द्वितीयो घनवल्लभो–जायते। अनेन प्रकारेणाष्टौ विकृतयः पठ्यन्ते।

संहितापाठः

↓

पदपाठः

क्रमः

(अष्टिविकृतयः)

1. जटा 2. माला 3. शिखा 4. रेखा 5. ध्वजः 6. दण्डः 7. रथः 8. घनः

क्रममाला पुष्पमाला

द्विचक्ररथः त्रिचक्ररथः चतुश्चक्ररथः

घनः घनवल्लभः

(क) शिखामुक्त्वाविपर्यस्यतत्पदानिपुनः पठेत्।

(ख) अन्तादादिपर्यन्तमादेश्चान्तपर्यन्तम्।

Scanned with CamScanner

शास्त्री-षष्ठसत्रार्ध-पञ्चमपत्रम्

।।शुक्लयजुर्वेद:।।

प्रश्न:१ **नवमेऽध्याये को यज्ञ: वर्ण्यते?**

उत्तरम् वाजपेयलक्षणो यज्ञ:।

प्रश्न:२ **केतपू: क:?**

उत्तरम् केत शब्देनान्नं प्रोच्यते अन्नस्य पविता, अन्नं पुनातीति केतपू:, अन्नस्य पावयिता।

प्रश्न:३ **नवमेऽध्याये कियंतो मंत्रा:?**

उत्तरम् चत्वारिंशित्सख्याका: मन्त्रा: सन्ति।

प्रश्न:४ **ब्राह्मणानां राजा को भवति?**

उत्तरम् सोमो ब्राह्मणानां राजा।

प्रश्न:५ **वाजपेयमन्त्रा कियन्मन्त्रपर्यन्तं सन्ति।**

उत्तरम् चतुस्त्रिंशन्मन्त्रपर्यन्तं वाजपेयमन्त्रा सन्ति।

प्रश्न:६ **वाजपेयमन्त्राणां ऋषि: क:।**

उत्तरम् तेषां वृहस्पतीन्द्रावृषी विद्येते।

प्रश्न:७ **राजसूयमन्त्राणां द्रष्टा क:?**

उत्तरम् वरुण: ऋषि:।

प्रश्न:८ **के देवा: अग्निनेत्रा:?**

उत्तरम् पुर: सद:।

प्रश्न:९ **विश्वदेवनेत्रा: के देवा: सन्ति।**

उत्तरम् पश्चात्सद:।

प्रश्न:१० **दुष्टर: क:।**

उत्तरम् दुस्तर: केनापि तर्त्तुमशक्य:।

प्रश्न:११ **द्वादशाक्षरेण इत्यस्य कोऽभिप्राय:?**

उत्तरम् जगत्यादित्या: जगतीच्छन्दसोभिमानिनी देवतामहं जयेम यथा विश्वेदेवा उदजयन्।

प्रश्न:१२ **स्वाहा इत्यस्याभिप्राय: क:?**

उत्तरम् इदं हवि: सुहुतमस्तु इति।

प्रश्न:१३ **वयं राष्ट्रे जागृयाम इत्यस्य तात्पर्यं किम्?**

उत्तरम् वयं च ताभिरभिषिक्ता: स्वकीये देशे अप्रमत्ता भवाम।

प्रश्नः१४ **नृम्णं किम्।**

उत्तरम् धनं।

प्रश्नः१५ **सवनं नाम किम्?**

उत्तरम् यज्ञो वै सवनम्।

प्रश्नः१६ **विशिप्रियाः क उच्च्यन्ते?**

उत्तरम् शोभनाभिषव संस्कृताः सुपूवाश्च विशिप्रियाः।

प्रश्नः१७ **कति विकृतिपाठाः?**

उत्तरम् अष्टौ विकृतयः।

जटामाला शिखारेखा ध्वजोदण्डोरथो धनः।

अष्टौविकृतयः प्रोक्ता क्रमपूर्वा महर्षिभिः।।

प्रश्नः१८ **ध्वजः कः?**

उत्तरम् ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेद्यदि।

वर्गे वा ऋचि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः।।

प्रश्नः१९ **ध्वजपाठः कथं भवति?**

उत्तरम् मंत्रादितोऽन्तपर्यन्तं अन्ततश्चादि पर्यन्तं यदा क्रमपाठः क्रियते तदा ध्वजपाठः।

प्रश्नः२० **दण्ड पाठस्य लक्षणं किम्?**

उत्तरम् क्रममुक्त्वाविपर्यस्य पुनश्च क्रममुत्तमम्।

अर्धर्चादेवमुक्तोऽयं क्रमदण्डोभिधीयते।।

प्रश्नः२१ **को रथ पाठः?**

उत्तरम् एकस्य पदस्यार्धर्चोवा पदद्वयं यत्र दण्ड पाठ विधिनोच्चार्यते स रथ उच्यते।

प्रश्नः२२ **रथः कतिविधः?**

उत्तरम् रथस्त्रिविधः द्विचक्रः त्रिचक्रश्चतुश्चक्रभेदात्।

प्रश्नः२३ **घनः कः?**

उत्तरम् पादशोऽर्धर्चशोवापि सहोक्त्यादण्डवद्रथः।

आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः।।

अन्तात्क्रमं नयेत् पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्।

आदि क्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः।।

प्रश्नः२४ **जटादण्डाभ्यां कः पाठः सिद्धयतिः।**

उत्तरम् घनपाठः।

प्रश्नः२५ **पञ्चसन्धियुक्तोघनपाठः कथं भवति?**

उत्तरम् पदद्वयस्य क्रमोत्क्रम व्युत्क्रमाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धिपाठो भवति। सघनवल्लभो भवति द्विधा प्रथमोऽयम्।

प्रश्नः२६ **द्वितीयो घनवल्लभः कथं ज्ञेयम्?**

उत्तरम् पञ्चसन्धि युतेन, अन्तादिपर्यन्तमादेरन्तपर्यन्तं च पाठेन द्वितीयोघनवल्लभः।

प्रश्नः२७ **ध्वजपाठं कश्चकार?**

उत्तरम् विश्वामित्रोऽपठद्ध्वजम्।

प्रश्नः२८ **दण्डपाठः कस्याविष्कारः?**

उत्तरम् दण्डं पराशरोऽवोचद्।

प्रश्नः२९ **कश्यपः कं पाठञ्चकार?**

उत्तरम् कश्यपोरथमब्रवीत्।

प्रश्नः३० **घनपाठः केनाविष्कृतम्?**

उत्तरम् घनमत्रिमुनिः प्राह विकृतीनामयं क्रमः।

प्रश्नः३१ **वेदे उपसर्गः भिन्नो भवति वा क्रियायोगे?**

उत्तरम् भिन्नो भवति।

प्रश्नः३२ **क्रियातो भिन्नोपसर्गं दर्शयत?**

उत्तरम् ‘‘पाप्मनापृङ्क्तम्’’।

प्रश्नः३३ **महीधराचार्येण कुत्रोपसर्गः क्रियया योजितः?**

उत्तरम् मां पाप्मना विपृङ्क्तम्, वियोजयतम्।

प्रश्नः३४ **आचार्य महीधरः किं नामभाष्यं व्यदधात्?**

उत्तरम् वेददीपनाम्ना।

प्रश्नः३५ **महीधराचार्यः स्वभाष्ये कां त्रिवेणीं प्रवाहयति?**

उत्तरम् मन्त्रब्राह्मणसूत्रात्मिकां त्रिवेणीं।

शास्त्री-षष्ठसत्रार्ध-षष्ठपत्रम्

।।निरुक्तम्।।

प्रश्नः१ अतिस्तुतयः कुत्राचक्षते?

उत्तरम् त्रयोदशाध्याये।

प्रश्नः२ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिरित्यतिस्तुतिः कुत्र?

उत्तरम् ऋग्वेदे संख्या २.५-२७-२ गृत्समददृष्टं।

प्रश्नः३ यदित इन्द्रशतं दिवः शतं भूमयः प्रतिमानस्युरिति कस्याति स्तुतिः?

उत्तरम् इन्द्रस्य।

प्रश्नः४ 'नेन्द्रं देवममंसत' एषातिस्तुतिः?

उत्तरम् आदित्यरश्मीनाम्।

प्रश्नः५ कतमानि वाक्चत्वारि पदानि, आर्षमते।

उत्तरम् ओङ्कारो महात्याहृतयश्चेत्यार्षम्।

प्रश्नः६ नामाख्याते चोपसर्गनिपाताश्चेति कस्यमतम्।

उत्तरम् वैयाकरणानाम्।

प्रश्नः७ तुरीयं वाचः के वदन्ति?

उत्तरम् मनुष्याः।

प्रश्नः८ चत्वारि शृङ्गेति क एते सन्ति?

उत्तरम् वेदाः।

प्रश्नः९ मन्त्रः कल्पोब्राह्मणं चतुर्थी व्यावहारिकीति केषां मान्यता?

उत्तरम् याज्ञिकानाम्।

प्रश्नः१० सप्तछन्दांसि के?

उत्तरम् यज्ञात्मकस्याग्नेः हस्ताः।

प्रश्नः११ ऋचोयजूँषि सामानि चतुर्थी व्यावहारिकीति के समामनन्ति?

उत्तरम् नैरुक्ताः।

प्रश्नः१२ पारोवर्यवित्सुखलु वेदितृषु कः प्रशस्यो भवति?

उत्तरम् भूयोविद्यः।

प्रश्नः१३ श्रुतिमतिबुद्धिशब्देन किमाख्यायते?

उत्तरम् शास्त्रविज्ञानप्रभवाविद्या।

प्रश्नः१४ **तादभाव्यम् इति पदस्य कोऽर्थः?**

उत्तरम् सायुज्यम्।

प्रश्नः१५ **अनुभवत्यनुभवतीति द्विरुक्तिः कथं?**

उत्तरम् इयं ग्रन्थसमाप्तिसूचिका भवति।

प्रश्नः१६ **ब्राह्मणा इत्यस्य कोऽर्थः?**

उत्तरम् अधिगतमन्त्रार्थतत्त्वाः।

प्रश्नः१७ **मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहितं किं प्रायच्छन्?**

उत्तरम् एतत् तर्कशास्त्रं ऋषिं प्रायच्छन् येन सर्वतो भावेन शक्यन्तेऽभ्यूहितुं मन्त्रार्थाः तस्मै।

प्रश्नः१८ **मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहोऽभ्यूह्लोऽपि श्रुतितोऽपि तर्कतोऽपि वा?**

उत्तरम् क्वचिच्छ्रुतितोऽपि तर्कतश्च।

प्रश्नः१९ **समासते इत्यस्यार्थः कः?**

उत्तरम् अपुनरावृत्त्या स्वरूपेऽवस्थानं समासनम्।

प्रश्नः२० **व्योमन् इति किम्।**

उत्तरम् विविधं हि शब्दजातमस्मिन्नोतप्रोतञ्चेति व्योम, तस्मिन् तिसृषु मात्रासु अकार, उकार, मकार, लक्षणासूपशान्तासु यदव शिष्यते तदक्षरं परम व्योमन् इति।

प्रश्नः२१ **सर्वे देवाः कुत्र निषेदुः?**

उत्तरम् प्रणवस्य सर्वमात्रात्मकत्वात् ब्रह्माधिष्ठानत्वाद्वा सर्वदेवानां ब्रह्मणि निवासः।

शास्त्री-षष्ठसत्रार्ध-षष्ठपत्रम्

।।पारस्करगृह्यसूत्रम्।।

प्रश्नः१ पारस्करगृह्यसूत्रे कियन्ति काण्डानि।

उत्तरम् त्रीणि।

प्रश्नः२ तृतीयकाण्डस्य नवम्यां कण्डिकायां कः विषयः निगदितः?

उत्तरम् वृषोत्सर्गः।

प्रश्नः३ वृषोत्सर्गयज्ञः कीदृक्कर्म?

उत्तरम् काम्यकर्मेति।

प्रश्नः४ वृषोत्सर्गकालः कः?

उत्तरम् कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यां रेवत्यां वास्वयुजस्य चैत्र्यामाश्वयुज्यां वा कर्त्तव्यकालः।

प्रश्नः४ एष वृषोत्सर्गविधिः कस्मादाचर्यते?

उत्तरम् स्वर्गादिकामस्य औपासनाग्नौ साग्निकेन क्रियते।

प्रश्नः६ उदककर्म किमुच्यते?

उत्तरम् उदकेनकर्मक्रिया, अञ्जलिदानमिति।

प्रश्नः७ अद्विवर्षे प्रेते मातापित्रौराशौचं कियत्कालिकं?

उत्तरम् एक रात्रं त्रिरात्रं वा।

प्रश्नः८ इतरेषां सजातीयानां कालः?

उत्तरम् शौचमेवेतरेषां, स्नानादिभिरेव शुद्धिः।

प्रश्नः९ प्राचीनावीतिनः के?

उत्तरम् प्राचीनावीतं विद्यते येषां ते प्राचीनावीतिनः कृतापसव्या इत्यर्थः।

प्रश्नः१० अवनेजनप्रत्यवनेजने इत्यस्य कोऽर्थः?

उत्तरम् श्राद्धेपिण्डदानार्थमास्तृत कुशस्य जलेन सेचनं, ततः पिण्डदानं पुनः जलेनसेचनं प्रत्यवनेजनमिति।

प्रश्नः११ चतुर्थस्य निवृत्तिः इत्यस्य कोऽर्थः।

उत्तरम् पितापितामहप्रपितामहेभ्यो हि पिण्डदानं, सपिण्डीकरणे कृते सति चतुर्थस्य वृद्धप्रपितामहस्य निवृत्तिः, 'त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते' इति स्मृतिः।

प्रश्नः१२ नद्यन्तरे नावं कारयेन्नवा इत्यस्य कोऽर्थः?

उत्तरम् एकादशेह्नि नद्यन्तरे गोपशुः आलभेत नवा आलभेत।

प्रश्नः१३ निर्ऋति केन यज्ञेन यजेत?

उत्तरम् पाक यज्ञेन।

प्रश्नः१४ **सभा समितिश्च कस्य दुहितरौ?**

उत्तरम् प्रजापतेः।

प्रश्नः१५ **अथातो रथारोहणं कुत्र प्राप्यते?**

उत्तरम् चतुर्दशीकण्डिकायाम्।

प्रश्नः१६ **हस्त्यारोहण मन्त्रः कः?**

उत्तरम् हस्तिनमभिमृशन्- ''हस्तियशसमसि हस्तिवर्चसमसि स्वस्ति मा सम्पारय'' इति।

प्रश्नः१७ **अनिराकरणं पदस्य कोऽर्थः?**

उत्तरम् अविस्मरणं कर्म, अधीतविद्याया येन परित्यागो न भवेत्।

प्रश्नः१८ **अथातोऽधीत्याधीत्येति कुत्र प्राप्यते?**

उत्तरम् षोडशी कण्डिकायाम्।

प्रश्नः१९ **औरसाः के वर्णाः?**

उत्तरम् हकाररहिताः वर्गपञ्चमान्तस्थाः।

प्रश्नः२० **दन्त्याः के?**

उत्तरम् दन्तेषु भवाः, लृतु लसानां दन्ताः।